Subject- Maithili (IInd Semester)

Paper code- CC-9, MTL-531

Topic - Uttaraak Kathaavastu

Format - PDF

Name/contact- Dr. Sudhir Kumar Jha
Department of Maithili
Patna University
Mobile- 9661819662
Email- drsudhirkrjha1170@gmail.com

Scanned with CamScanner

# 'उत्तरा'क कथावस्तु

'उत्तरा' पं. सुरेन्द्र झा 'सुमन' द्वारा रचित एक खण्डकाव्य थिक। सात सर्ग मे निबद्ध एहि खण्डकाव्यक विषयवस्तु महाभारतक विराटपर्व एवं द्रोणपर्वक किछु अंश सँ संबद्ध अछि। विवेच्य पोथी मे मत्स्य जनपदक राजा विराटक विराटनगरक विराट परिवारक पंचपाण्डव अज्ञातवासक, उत्तराक शिक्षा, विराटनगर पर दुर्योधनक आक्रमण, कुमार उत्तरक विजय, उत्तराक विवाह, महाभारतक युद्ध मे अभिमन्युक वीरगति, उत्तराक सद्बुद्धिक संगहि प्रकृति वर्णन जीवन मे नारीक अनिवार्यता एवं युद्धक अवशंसा सेहो वर्णित अछि।

प्रथम सर्ग मे मत्स्य जनपदक आलंकारिक परिचय देल गेल अछि। ई जनपद सब तरहेँ सुखीसम्पन्न छल। ओतय ने तँ कहियो अकाल पड़ैत छल आ ने पिताक अछैत पुत्र मरैत छल। रोग-शोक ओ रिपुक आक्रमण सँ सुरक्षित मत्स्य जनपद मे सदिखन उत्सवे होइत रहैत छल। परस्पर बन्धुता एवं नवनिर्माणक जोश एहि जनपदक लोक मे व्याप्त रहैत छल। आर्यभूमिक पताका-सन प्रशंसित छल मत्स्यदेश। विराटनगर ओकर राजधानी आ विराट राजा छलाह। राजा नामानुरूपेँ बलक निधान, गुण-मणिमंडित एवं रिपु-वध पंडित छलाह। विराटनगर गगनचुम्बी भवन सँ भरल अमर-नगर सँ सुन्दर छल। श्रृंगारवती नवल रमणी सन धन्य विराटनगर सर्वदा हरित, चमत्कृत आओर सुषमा मण्डित रहैत छल।

राजा विराटक परिवार मे हुनक पत्नी सुदेष्णा पुत्र उत्तर एवं श्वेतकेतु तथा पुत्री 'उत्तरा' छलीह। उत्तरा चतुर्दशीक चान सन यौवनक दुआरि पर ठाढ़ सघन घन मे चमकैत विद्युल्लता-सन चंचला छलि। उत्तर कुमार युवराज छलाह आ श्वेतकेतु गृहनीतिक अधिकारी।

एक दिन राजा विराट सचिव सामन्त उद्भट भटनीतिक सभासद, कलाकार, पण्डित, पुरोहित, बन्दी-मागध जनपदक प्रतिनिधि एवं प्रमुख नागरी सँ भरल सभा मे बैसल रहथि। ओहि सभा मे देश-विदेशक रीति-नीतिक चर्चाक संगे-संग लोक-व्यवहार, राज्यक आवश्यकता, जनपदक सुरक्षाक उपाय एवं राजनीतिक आलोचना-प्रत्यालोचना चलि रहल छल। ओहीकाल मे अज्ञातवासक समय व्यतीत करवा लेल पाँचो पाण्डव द्रौपदी कैँ संग मे नेने ओतए पहुँचलाह। ओ सभ राजा विराटक आज्ञा सँ क्रमहि प्रवेश कए विभिन्न जीविका सँ सन्नद्ध भेलाह। युधिष्ठिर कंक नाम सँ विराटक सेवा मे द्युत कलाक विशेषज्ञ रूपेँ नियोजित भेलाह। भीम बल्लभक नाम सँ पाक विभागक प्रधान बनलाह। अर्जुन वृहन्नलाक नाम सँ राजकुमारी उत्तराक कला-शिक्षक नियुक्त कएल गेलाह।

Scanned with CamScanner

नकुल ग्रंथिक रूप मे उत्तर कुमारक सारथी भेलाह, सहदेव तन्तिपालक नाम सँ गोशालाक प्रभारी बनलाह। द्रौपदी सैरिन्ध्रीक नाम सँ सुदेष्णाक शृंगार साधिका बनलीह।

युधिष्ठिर द्यूत खेलि नृपक मानस मे मोद बढ़ाबए लगलाह, भीम पाचक, पटुता देखाए सभक विनोद करए लगलाह, अर्जुन क्लीवक वेश रचि उत्तरा कें नृत्याभिनयक शिक्षा देबए लगलाह, नकुल अश्वक कें नित्य नूतन चालि सिखबए लगलाह, सहदेव गोधनक सम्वर्द्धन मे निमग्न रहए लगलाह आ द्रौपदी सुदेष्णाक शृंगार करए वृद्धावस्था मे यौवनक समावेश करए लगलीह। एहि प्रकारें द्रुतगति सँ समय बीतए लागल।

नृत्य-संगीतक शिक्षा पूर्ण भेला उत्तर राजा विराटक सभा मे उत्तरक परीक्षा भेल। परीक्षक छलाह अर्जुन। उत्तर क्रमशः संगीत एवं नृत्यक विविध गान-भंगिमा देखाओल। सुदेष्णा पुत्रीक प्रशंसा मे पुल बान्हि देल। उत्तरा अपन गान-भंगिमा सँ नओ रस, उनचासो भाव, स्थायी-संचारि अनुकरण अनुभावन एवं समग्र ललित कला कें मूर्त्त करए देल। चारू दिस सँ विभिन्न प्रकारक प्रेमोपहारक वर्षा होमए लागल। दासी रहितहुँ गुण-ग्राहिका सैरन्ध्री अपन हार उतारि कए उत्तरा कें पहिराए देल। ओ हार कुन्तीक देल छल। अर्जुन बूझि जोलाह जे द्रौपदी उत्तरा कें पुत्रवधू रूप मे स्वीकार कए लेने छथि। दोसर लोक सभ बूझल जे सैरन्ध्री-उत्तरक नृत्यकला सँ निमुग्ध भए हार देलक अछि, किन्तु उत्तरक मोन अन्य किछु सुनए लागल। एहि बीच विराटक सार, सुदेष्णाक सहोदर भाए सेनापति कीचक केर कामक दृष्टि द्रौपदी पर पड़ए लागल। द्रौपदीक अनिन्द्य सौन्दर्य कीचक मे कुबुद्धि उत्पन्न कए देलक। सुदेष्णाक वर्णनोपर्यन्त कीचकक आवेग न्यून नहि भेल। ओकर कामुकता तहिना बढ़ल जेल जेना अग्निशिखा घृतक आहुति पाबि प्रज्वलित होइत अछि। द्रौपदी जाह्नवीक जलधारा सन शुचिता छलि। कीचकक प्रपंच सँ हुनका हृदय मे क्रोधक तरंग उठल। ओ अपन पति सभ सँ कीचकक विषय मे कहि देल। भीम कीचकक कंठ दाबि मारि देलनि। कीचकक मृत्यु सँ राजा विराट समेत सम्पूर्ण मत्स्य जनपद आतंकित भए उठल। केओ कहैत छल जे एहि राज्य पर विधाताक वक्र दृष्टि प्रारंभ भए जेल तँ केओ कहैत छल जे सैरन्ध्रीक पति यक्ष कामुक कीचकक वध कएल अछि। राजा विराट अपन जनपद मे विदेशी सभक प्रस्थान-आगमन पर प्रतिबन्ध लगाए देलनि। विराटक पत्नी अपन भाएक मृत्यु सँ अति दुखित छलीह आ सैरन्ध्री हुनका आश्वस्त करबा मे व्यस्त छलि। सुदेष्णाक विचार छल जे सैरन्ध्रीएक कारणें ई अनर्थ भेल अछि। कीचकक मृत्युक समाचार देश-विदेश सौंसे प्रसारित भए जेल। एक सीमा पर त्रिगर्त्तराजक आक्रमण प्रारम्भ भेल आ दोसर दिस दुर्योधन, भीष्म, द्रोण समेत आबि कए युद्ध ठानि देल। उत्तर कुमारक सारथि भए कए बृहन्नलारूप अर्जुन युद्ध मे शामिल भेलाह। परिणाम ई भेल जे दुष्ट दुर्योधन पराजित भए घूमि जेल।

तत्पश्चात् विराटनगर मे विजयोत्सवक उल्लास गूँजए

Scanned with CamScanner

लागल। उत्तर कुमारक जय-जयकार होमए लागल। मुदा उत्तर कुमार विजयक सम्पूर्ण श्रेय अर्जुन कें देलनि। ओहि विजय सभा मे पाँचो पाण्डव प्रकट भेलाह। राजा विराट पाण्डव सभक कृतज्ञ भेलाह। ओ अर्जुन सँ अपन पुत्री उत्तरा कें पत्नी रूप मे अपनावए लेल आग्रह करल। अर्जुन शिष्या कें पत्नी रूप मे नहि, पुत्रवधू रूप मे स्वीकार कएलनि। अर्जुनक पुत्र अभिमन्यु एवं उत्तराक विवाहक आयोजन होमए लागल। यदुपति कृष्ण सँ लए कए सकल कुटुम्बगण आमंत्रित भेलाह। हर्षोल्लासक मध्य विवाह सम्पन्न भेल। ओतए ई निश्चित भेल जे कृष्ण संधिक प्रस्ताव लए कए दुर्योधन सँ भेंट करथु। पाण्डवक मांग रहनि मात्र पाँच गाम। दुर्योधन कहल जे 'सूच्यग्र न दातव्यम् बिना युद्धेन केशव:'। श्रीकृष्ण घुरि अएलाह। युद्धक आयोजन होमए लागल। एगारह अक्षौहिनी सेनाक संग दुर्योधन आ सात अक्षौहिनी सेनाक संग पाण्डव युद्ध मे सन्नद्ध भए गेलाह। अठारह दिन धरि युद्ध चलल। द्रोणक सेनापतित्त्व मे अर्जुनक पुत्र अभिमन्यु चक्रयुद्ध मे सात महारथी द्वारा मारल गेल। उत्तरा गर्भवती छलि। कृष्ण उत्तरा कें परितोष देल जे पाण्डव वंशक रक्षा लेल जीबू आ गर्भस्थ शिशुक रक्षा करू। उत्तरा बाजलि जे हम गर्भस्थ शिशु मे पिता अभिमन्युक आत्र-तेज आ अपन धार्मिकताक समन्वय करब। उत्तरा अपन भाव विचार कें पुत्र परिक्षित मे साकार कएल।